किया है। दुर्खीम कहते हैं, "भौगोलिक तत्वों के साथ आत्महत्या के यह सम्बन्ध को अस्वीकार किया है। दुर्खीम कहते हैं "भौगोलिक पर्यावरण प्रत्यक्ष रूप में न तो सामाजिक जीवन को तीव्रता प्रदान करते हैं और न ही आत्महत्याओं को बढ़ाने में इनका कोई प्रभाव होता है। आत्महत्याएँ सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर हैं।"

अनुकरण एवं आत्महत्या

(Imitation and Suicide) - आत्महत्या के सामाजिक कारकों की विवेचना से पूर्व दुर्खीम ने एक और मनोवैज्ञानिक कारक 'अनुकरण' की विवेचना की है। "अनुकरण शब्द का प्रयोग उस प्रक्रिया के लिए किया जाता है जब हम किसी ऐसे कार्य की पुनरावृत्ति करते हैं जो कि हमारी उपस्थिति में या हमारी जानकारी में घटित हुआ है।" दुर्खीम ने विभिन्न देशों एवं क्षेत्रों के अध्ययन से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि 'अनुकरण' को आत्महत्या का कारण नहीं ठहराया

जा सकता। वैयक्तिक मामलों में अनुकरण हो सकता है, परन्तु ये सामान्य रूप में आत्महत्या को प्रभावित नहीं करते।

Types of Suicide

दुर्खीम आत्महत्या को सामाजिक घटना मानते हैं और आत्महत्या के सामाजिक कारणों पर जोर देते हैं। उन्होंने आत्महत्या के तीन प्रकार बताए हैं जो इस प्रकार है —

1. अहंवादी आत्महत्या (Egoistic Suicide) —
इस प्रकार की आत्महत्या उस समय होती है जब व्यक्ति और समूह का सम्बन्ध अत्याधिक ढीला, अव्यवस्थित और अपर्याप्त हो तथा सामाजिक स्थिरता व सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में सामूहिक मतैक्य (Group consensus) इतना दुर्बल चुका हो कि व्यक्ति स्वाभाविक सामूहिक जीवन के स्वाभाविक सम्पर्कों से अपने को सामाजिक तौर पर पृथक एवं विभिन्न पाए जब समूह इस

शांति टूट चुका है तो अहंवादी आत्महत्या की घटनाएँ सामाजिक तौर पर एकल एवं विघटित व्यक्तियों के लिए वैयक्तिक समीकरण (Personal Equation) की समस्या को हल करने के प्रमुख स्वरूपों के रूप में प्रकट होती है।

जब व्यक्ति स्वयं को समाज एवं सामूहिकता से कटा हुआ पाता है, तो शनैः शनैः वह अंतर्मुखी हो जाता है तथा समाज के सामान्य कार्यों में उसका महत्व घटने लगता है और उस व्यक्ति का जीवन कम महत्वपूर्ण हो जाता है जिन तत्वों में वह कड़ी जो व्यक्ति को समाज से बांधती है, उसी की शक्ति कमजोर पड़ जाती है अतः समाज से तिरस्कृत व्यक्ति को समाज के अकेलेपन का अनुभव होता है और उसके मन में यह भावना जड़ पकड़ लेती है कि इस संसार में उसका अपना कोई नहीं है जो उसके साथ सहानुभूति रखता है। यह परिस्थिति व्यक्ति के अहं के लिए अपमानजनक है और इससे बचने

के लिए वह आत्महत्या कर लेता है।
उपर्युक्त विचारों की पुष्टि में दुर्खीम ने धर्म, परिवार तथा राजनैतिक समाजों के अनेक उदाहरणों को प्रस्तुत किया है। जैसे - जहाँ व्यक्ति धार्मिक समूह के साथ अधिक दृढ़ता से जुड़ा रहता है, वहाँ आत्महत्या की दर कम होती है। लेकिन धार्मिक समूहों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता अधिक होती है और व्यक्ति धार्मिक संगठनों के साथ अधिक दृढ़ता से नहीं जुड़ा होता है वहाँ आत्महत्या की दर अधिक होती है। कैथोलिक धर्म के मानने वाले बहुत कम आत्महत्या करते हैं जबकि प्रोटेस्टेन्ट धर्म के मानने वाले अधिक क्योंकि कैथोलिक धर्म एक रूढ़िवादी धर्म है और वह अपने धार्मिक नियमों को बिना किसी आलोचना के स्वीकार करने का आदेश देता है अतः यहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं होती। दूसरी ओर प्रोटेस्टेन्ट धर्म एक व्यक्तिपरक या वैयक्तिक धर्म है इसीलिए यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अधिक बल देता है।

Scanned by CamScanner

2. परार्थवादी आत्महत्या (Altruistic Suicide) -
परार्थवादी आत्महत्या आत्महत्या के प्रथम प्रकार के विपरीत है शाब्दिक रूप में परार्थवादी आत्महत्या वह आत्महत्या है जो स्वयं के लिए नहीं बल्कि समाज के लिए की जाती है परार्थवादी आत्महत्या तब होती है जब व्यक्ति और समाज या समूह का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ हो जाता है कि समाज व्यक्ति के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से निगल जाता है

ऐसी स्थिति में व्यक्ति के अपने व्यक्तित्व का अस्तित्व ही नहीं रह पाता और वह जो कुछ भी देखता है, सोचता या करता है वह सब कुछ समाज या समूह की दृष्टि से करता है वह सिर्फ एक समूह का सदस्य रह जाता है और कुछ नहीं अतः समाज उसे आत्मबलि देने के लिए बाध्य करता है भारतीय राजपूत स्त्रियों की 'जौहर प्रथा' इस प्रकार की आत्महत्या का उदाहरण है

3. विसंगत आत्महत्या (Anomic Suicide) -
विसंगति आदर्श - विहीनता की एक

स्थिति है, स्वाभाविकता का अभाव है, नियमों का विघटन है, एक ऐसी स्थिति है जिसे हम अनसर नियमविहीनता कहते है। विशेषत आत्महत्या मनुष्य के क्रिया-कलापों में नियमन के अभाव और उसके परिणामस्वरूप उसे मिलने वाले कष्टों के कारण घटित होती है। इस – अचानक विवाहिता के जाना या नौकरी छूट हो जाना दोनों ही ऐसी आत्महत्याओं को प्रोत्साहित कर देते है क्योंकि व्यक्ति नवीन परिस्थितियों से सामंजस्य नहीं कर पाता।

आलोचना (criticism) –

1. Zilbourg के अनुसार आत्महत्या के सांख्यिकीय आँकड़े जिस प्रकार आज उन्हें संकलित किया जाता है बहुत कम विश्वसनीय है। दुर्खीम के द्वारा यूरोपियन व अमेरिकन समाज के सांख्यिकीय आँकड़ों का भण्डार प्रस्तुत किए जाने के बाद भी अनेक आत्महत्याओं का रिकार्ड उनके कोष से बाहर था तो अनेक का रिकार्ड था ही नहीं। अत: आत्महत्या जैसी घटना की व्याख्या सहज आँकड़ों के आधार पर करना उतना सरल नहीं जितना दुर्खीम ने अनुमान

2. Steinmetz (स्टेनमेट्ज) ने लिखा है जो भी आंकड़े एकत्रित करने में सफल हो पाया हूं, इनसे यह प्रतीत होता है कि सभ्य लोगों की अपेक्षा वन्य मनुष्यों में आत्महत्या की प्रवृत्ति अधिक है।

3. हैरी बार्न्स (Harry E Barnes) के अनुसार आत्महत्या के सिद्धांत में दुर्खीम ने व्यक्तिगत प्रेरणा तथा सांस्कृतिक कारकों को कोई महत्व नहीं दिया, जो व्यक्ति को आत्महत्या करने को प्रेरित करते हैं।

Sunita Kumari
16/5/20

Scanned by CamScanner